

कैसा दुःखी रिवाज है कि जिसे जीने
की तम हाँकने को बीथड़ा मी त मिले
उसे मरने पर वरा कफन चाहिए।

जिस समाज में तौलत पजसने है,
उहाँ में मनुष्य का जोल उरा के बन्धन में लपट
और तिसका या तौँका राता है। मरी पग
पग पर प्रलोम में के जागे विहा दुखा है
और समाज की फज्रवरथा उदकी से हुका
दुष उपकरण और जीवता तम ता को
उकसाति और जानगी नष्ट नै है न।

जबु चरमाय वा होणे में यँद उठा
नै बगुहिसा ही नदने और यण्डे कातो
का है, और वसुत ही छोटा हिरसा उदकी
का, जो उदकी शक्ति और फाट के
उजुदाय की काने बस में निने हुये है। उदके
का नै साण किसी वरुद की हुम का
सारी शक्ति नालवती। उदका उदिया
नसलिया है कि, उदके मारी को
नीला बगदि, यदज निरुये और यद
काय दुरा दुखता नै कित नै उदका